SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

NŸkhlx<h lkfgR; esa y{e.k eLrqfjgk dk ;ksxnku

ujsUæ dqekj lywtk] हिंदी विभाग
राजीवगांधी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, लोरमी जिला मुंगेली, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
ujsUæ dqekj lywtk] हिंदी विभाग
राजीवगांधी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, लोरमी जिला मुंगेली, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/01/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/01/2023
Plagiarism : 00% on 20/01/2023

'kks/k lkj

छत्तीसगढ़ी गीतकार लक्ष्मण मस्तुरिहा का जन्म–07 जून 1949 को ग्राम मस्तुरी, जिला बिलासपुर छत्तीसगढ़ में हुआ था। महज 22 वर्ष की उम्र में दुर्ग के दाऊ रामचंद्र देशमुख के "चंदैनी गोंदा" सांस्कृतिक मंच के प्रमुख गीतकार बन गये थे। आपने "चंदैनी गोन्दा' के लिये लगभग डेढ़ सौ गीत की रचना की। लक्ष्मण मस्तुहिया जी द्वारा रचित प्रसिध्द गीत "मोर संग चलव रे", "मय बंदत हव दिन रात वो मोर धरती मईया", "पता दे जा रे, पता दे जा रे गाड़ी वाला", "मया नई चिन्हें देसी विदेशी", "मन डोले रे मांघ फगुनवा", आदि प्रमुख है। छत्तीसगढ़ी कविताओं का संग्रह 'मोर संग चलव रे' वर्ष 2003 में, 61 छत्तीसगढी निबंधो का संग्रह 'माटी कहे कुम्हार से'वर्ष 2008 में और 71 हिन्दी कविताओं का संग्रह 'सिर्फ सत्य के लिये' भी वर्ष 2008 में प्रकाशित हुए। मस्तुरिया जी का अन्य कृतियाँ में छत्तीसगढ़िया हव रे, धुनही बंसुरिया,गवई–गंगा। वीर नारायण सिंह जी के जीवनी गाथा पर आधारित मस्तुरिया जी की लम्बी कविता 'सोनाखान के आगी' भी प्रकाशित हो चुकी है। रामचंद्र देशमुख जी ने देवारों के नाचने–गाने की पारंपरिक कला को वर्ष 1994–95 में 'देवार डेरा 'के नाम से संस्था बनाकर नई पहचान दिलाई।

eq[; 'kCn

NŸkhlx<h lkfgR;] y{e.k eLrqjh;k] xhr-

çLrkouk

7 जून 1949 को मस्तुरी जिला बिलासपुर में जन्मे लक्ष्मण मस्तुहिया ने कई छत्तीसगढ़ी गीतों की रचना की और अपनी मधुर आवाज में उन्हें गाया भी है। इनके गीतों ने जनमानस के दिलों में अपनी विशिष्ट जगह बनाई है। लक्ष्मण मस्तूहिया को छत्तीसगढ़ का जनकवि कहा जाता है। लक्ष्मण मस्तूरिया रामचंद्र देशमुख बहुमत

सम्मान और सृजन सम्मान से नवाजा गया था। आप कुछ समय तक 'लोकसुर' नामक मासिक पत्रिका के सम्पादन और प्रकाशन कार्य भी किया। भोपाल स्थित संस्था दुष्यंत कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय द्वारा मार्च 2008 में आयोजित अलंकरण समारोह में उन्हें मध्यप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल द्वारा 'आंचलिक रचनाकार सम्मान' से विभूषित किया गया था। छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय गीतकार और लोकगायक लक्ष्मण मस्तुरिया जी का छत्तीसगढ़ी साहित्य मे योगदान अमूल्य है।

मिट्टी की महक को हर घर–द्वार तक फैलाने वाली मस्तुरिया जी की मस्त आवाज़ में एक जादू था। अपने छत्तीसगढ़िया होने का जैसा मीठा और सधा हुआ लक्ष्मण मसतुरिहा जी को था वैसा कोई बिरला ही कर पाता है। आप सही अर्थ में छत्तीसगढ़ी सुमत के सरग निसइनी थे।

आकाशवाणी, दूरदर्शन, विभिन्न टीवी चैनल, वृत्त चित्र, नए ज़माने के यूट्यूब, पॉडकास्ट और साथ–साथ एक औसत किसान जीवन को सरस गीत, कर्णप्रिय संगीत और मनोहारी नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करने वाले सर्वप्रिय आयोजन चंदैनी गोंदा से लेकर, भोरमदेव महोत्सव, छत्तीसगढ़ी लोक कला महोत्सव, चक्रधर समारोह, बस्तर महोत्सव, लोक मड़ई, रावत नाचा महोत्सव, माघ मेला, बस्तर का दशहरा जैसे और भी कई प्रसंग हैं जिनसे छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति को पूरे जनरंजक तथा मनोरंजक रूपों में लगातार अभिव्यक्त किया जाता रहा है। आकाशवाणी में उनके गीत सुनकर लोग एकबारगी बिनाका गीतमाला की तरफ झूमने लगते थे। लक्ष्मण पुकार–पुकार कर कहने लगेः

मोर संग चलव रे, मोर संग चलव जी,
ओ गिरे–थके हपटे मन, अऊ परे–डरे मनखे मन,
मोर संग चलव रे, मोर संग चलव जी।
अमरैया कस जुड़ छाँव म मोर संग बईठ जुड़ालव ,
पानी पी लव मै सागर अवं, दुःख–पीरा बिसरा लव।
नवा जोत लव, नवा गाँव बर, रस्ता नवां गढ़व रे!
मोर संग चलव रे।

उनकी आत्मा शायद यहाँ के माटी पुत्रों के दर्द को आत्मसात कर चुकी थी। माटी के गीतों में, खेतों के गीतों में, मेहनत के गीतों में, स्वर लहरियों की दुखित भावनाओं में भी मस्तुरिया जी की लेखनी संवेदना का अद्भुत इतिहास रचती रही। वे सचमुच छत्तीसगढ़िया और भारत माँ के रतन बेटा बढ़िया थे। इसीलिए तो बार–बार कहते रहेः

मंय बंदत हौं दिन–रात वो,
मोर धरती मईया
जय होवय तोर
मोर छईयां भुइंया
जय होवय तोर।

उधर मांघ फागुन में उनके मन के डोलने का अंदाज़ भी निराला रहा। वहीं पता दे जा रे, पता ले जा रे का तो कोई जवाब ही नहीं है। ऐसी गहन आत्मीयता का मिलना दुर्लभ है। आपने सही मायने में लक्षमण मस्तुहिया ने साबित किया किः

हम करतब कारन मर जाबो रे
हम धरती कारन जुझ जाबो रे
फेर ले लेबो संग्राम रे।

दूसरी तरफ बच्चों की तुतलाती जबान भी वहां उनकी लेखनी के ज़रिये उद्घोष करती हैः

चन्दा बन के जीबो हम

सुरुज बन के जीबो हम
अन्यायी के आगू रे भैया
आगी बरोबर जरबो हम
सुख सुवारथ अउ छोड़ माया ला
पर के सेवा करबो हम।

ऐसी सुर सधी ज़िंदगी और मर्म भरी खनकती आवाज़ को नमन!

लक्ष्मण मस्तुरिया एक अइसन नाम हे जिनला छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक विरासत के युग–पुरुष कहे जाए तो कोनो अतिशयोक्ति नइ होही। उनमन अपन गीत के माध्यम ले जहाँ छत्तीसगढ़ी भाषा ल सरी दुनिया म स्थापित कर दिन उहें छत्तीसगढ़ के गीत और संगीत ला संस्कारित कर दिन। आवव उनकर गीत के अगास असन कैनवास ऊपर बगरे आने आने रंग के एक झलक देखन।

lPpk ekVh i=

लक्ष्मण मस्तुरिया के जीवन की सादगी और गीतों की सोंधी महक ही उन्हें एक सच्चा माटीपुत्र निरूपित करती है। उनके गीतों में समूचा छत्तीसगढ़ समाया हुआ है। वे अपनी जन्मभूमि की वंदना करते हुए अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं:

बड़े बिहिनिया सुत उठ के, तोरे पइयाँ लागँव
सुरुज जोत मा करँव आरती गंगा पाँव पखारँव
फेर काया फूल चढ़ावँव रे
मोर धरती मइया जय होवै तोर.....

^NÙkh lx<h dh dchj*

हम तोरे संगवारी कबीरा हो, हम तोरे संगवारी
ले के हाथ लुआठी अपन फूँके हन घरबारी

कबीर की तरह ही लक्ष्मण मस्तुरिया ने आडंबरों का विरोध बहुत ही शिष्टता से किया:

कहाँ जाहू बड़ दूर हे गंगा, पापी इहें तरव रे...

मात्र बाइस वर्ष की उम्र में चंदैनी गोंदा के मुख्य गीतकार और गायक बनने वाले लक्ष्मण मस्तुरिया गर्व से अपना परिचय देते हैं:

मँय छत्तीसगढ़िया अँव गा,
भारत माँ के रतन बेटा बढ़िया अँव गा...

गाँव–गाँव में शिक्षा की सुविधाएँ बढने से लोग शिक्षित हो रहे हैं, लेकिन दुखद पहलू यह भी है कि वे अब खेती–किसानी के कार्य से दूर होते जा रहें है। मस्तुरिया जी अपने गीत में माध्यम से नई पीढ़ी को प्रेरित करते हुए कहते हैं:

मोर राजा दुलरवा बेटा, तँय नागरिहा बन जाबे।

iyk;u

देश की प्रतिभाएँ भौतिक सुखों की चाह में अन्य देशों की ओर पलायन कर रही हैं। अपनी संस्कृति को बचाये रखने के लिए मस्तुरिया जी अपने गीतों के माध्यम से उन्हें संदेश देकर कहते हैं:

बात मान ले, परदेस झन जा रे
परदेस के हवा–पानी मा मन बौराय

अपन धरम करम अउ बोली, अपने ला नइ सुहाय
झुलवा झूलै करम गति भुलै रे दोस....

महिमा देश की

चंदन कस कसमीर कन्याकुमारी कुमकुम
छ्म एक बुरी न भूमि, बंग भूमि रुमझुम
जइसे एक बँसुरी म सात सुर तान हे
जिहाँ राम हे रहीम है ईसा गुरु गोविंद नाम हे
मोर भारत भुइयाँ धरम धाम हे.....

महिमा प्रदेश की

धरम धाम भारत भुइयाँ के मँझ मा हे छत्तीसगढ़ राज
जिहाँ के माटी सोनहा धनहा, लोहा कोइला उगलैं खान।
बाल्मीकि के इहि कुटिया मा कतको पढ़ पढ़ पाइन ज्ञान
तपसी आइन इहि माटी मा, मया करिन बनगिन भगवान।।

çe

मानव हृदय में प्रेम न हो तो वह पाषाण बन जाये। मस्तुरिया जी के गीतों में प्रेम की पराकाष्ठा दिखाई देती है। नायक–नायिका का प्रेम, रिश्ते नातों का प्रेम, जीव जंतु और प्रकृति के प्रति प्रेम, गाँव, राज्य, देश और सम्पूर्ण सृष्टि से प्रेम उनके गीतों में दिखाई देता है। गाड़ी वाला गीत में उन्होंने प्रेम को कितनी सुंदरता से परिभाषित किया है:

मया नइ चीन्हे रे देसी बिदेसी मया के मोल न तोल
जात बिजात न जाने रे मया, मया मयारुक बोल
काया माया संग नाच नचावै, मया के एक नजरिया...

fojg

संयोग श्रृंगार के अनेक गीतों के साथ ही वियोग श्रृंगार के उनके गीत किसी भी आहत हृदय को असीम शांति प्रदान करते हैं। घुनही बुरा ऐसा ही गीत है जो छत्तीसगढ़ी भाषा को न केवल अन्य भारतीय भाषाओं के समकक्ष खड़ा कर देता है बल्कि इसकी क्षमता की ऊँचाइयाँ दर्शाता है:

कोन सुर बाजँव मँय तो घुनही बँसुरिया
सुनि जेला आई जावै मोरे गँवतरिहा.....

fdlku dh foo'krk

प्रेम के संवाद उम्रजन्य मनुहार होते ही हैं किंतु इन मनुहारों में भी मस्तुरिया जी छत्तीसगढ़ के यथार्थ का चित्रण करना नहीं भूलते:

नायिका – नाक बर नथनी अउ पैरी मोरे पाँव बर
बिन लाने राजा, झन आह मोरे गाँव मा
नायक – लातेंव मँय संगी, फेर का करंव दुकाल मा
होन दे बिहाव पहिली, गढ़ा देहूँ सुकाल मा

eugkj

प्रेम गीतों में मस्तुरिया जी ग्रामीण परिवेश के संस्कारों को जीवित रखने में माहिर थे। उनके गीतों में ठेठ

शब्दों का चयन, छत्तीसगढ़ी भाषा की सम्प्रेषण क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण हैं:

कलकलहिन दाई मोला गारी दिही
भइया हे गुस्सेला मोला मारी दिही
मोला जावन दे न रे अलबेला मोर
अब्बड़ बेरा होगे मोला जावन दे न.....

ykdxhr

लक्ष्मण मस्तुरिया रिया जी ने ददरिया, करमागीकस गीत, सुआ गीत, देवार गीत, छेरछेरा गीत, खेल गीत, चंदैनी गीत, भड़ौनी गीत, बिहाव गीत, माता सेवा जैसे अनेक पारंपरिक की धुनों पर भी गीतों की रचना की। वे ऐसे बिरले कवि थे उनके अनेक गीत उनके जीवन काल में ही लोक–गीत बन गए।

Hktu

मस्तुरिया जी के अनेक गीत आध्यात्म और जीवन की निस्सारता पर आधारित हैं। ये गीत भजन के रूप में बहुत लोकप्रिय हुए:

एक नदिया हे दुइ किनार
ठिकाना ये पर न वो पार
चलो भइया रे, जिनगी के नैय्या धारे धार

tkx#d dfo

लक्ष्मण मस्तुरिया एक जागरूक कवि थे। वे अपने गीतों के माध्यम से शासकीय योजनाओं का प्रचार भी करते थे। वृक्षारोपण, स्वच्छता, शिक्षा अभियान आदि विषयों पर भी उनकी कलम खूब चली है।

jk"V' çse

मस्तुरिया जी के गीतों में राष्ट्रीयणा की भावना कूट–कूट कर भरी थी।

आगे सुराज के दिन रे संगी
बाँध ले पागा, साज ले बंडी
करमा गीत गा के आजा रे झुम जा संगी मोर....

lkL–frd vkj ,frgkfld èkjkgj

उनके गीतों में छत्तीसगढ़ के तीर्थ भोरमदेव, राजीव लोचन राजिम जैसे पवित्र स्थलों का महिमा–गान है तो सिरपुर जैसी ऐतिहासिक धरोहर का गुणगान भी देखने को मिलता है।

NÙkhlx< dk ioZ

हरेली, तीजा, पोला, दीवाली, होली जैसे पर्व पर भी मस्तुरिया जी ने गीतों की रचनाएँ की हैं।

'kCn p;u

मस्तुरिया जी ने अपनी रचनाओं में सरल और ठेठ देहाती शब्द का प्रयोग किया है ताकि छत्तीसगढ़ का प्रत्येक व्यक्ति उनकी रचनाओं को समझ सके। उनकी भाषा में ध्वन्यात्मकता के साथ ही साथ अलंकार अपनेआप ही जुड़ते चले जाते थे:

बस्तर के बाँस जा जा के साजा बंभरी कउहा के छोइला
कोरबा के बिजली भिलाई के लोहा, बइलाडिला कचलोहिया।

एक अन्य गीत में देखिए शब्द चयन का चमत्कार:

खँड़–खँड़ रुखवा पल–छिन के

सुख–दुख लागे दुइ दुइ दिन के
अरथ अकारथ पाप पुन के
जीना मरना हे मुड़ धुन–धुन के

NÙkh lx<h dh mnkjrk

अतिथि के रूप में आए शोषक को भी दया और मया बाँटने की उदारता सम्पूर्ण विश्व में केवल छत्तीसगढ़िया में ही पाई जाती हैः

काँटा खूँटी के बोवइया, बने बने के नठइया
दया मया ले जारे मोर गाँव ले.

उदारता की एक और बानगी

अमरित अमरित बाँट बाँट, मँयप जहर पी पी करियागेंव
तुम काट काट के जुरिया गेव, मँय बाँध बाँध के छरियागेंव।

–f"k vkj –"kd

जब काँध म नाँगर धर–धर के, जौंरा–भौंरा सँग पूत चलँय
होरे डंका बाजय, जस लड़े समर राजपूत चलँय
मोर कुटुम सरी ठिन्नाती हे, मँय राज सागर के नाती अँव
छत्तीसगढ़ के माटी अँव, मँय छत्तीसगढ़ में माटी अँव।
असाढ़ के महीने में धान बोने का आव्हान
चल चल गा किसान बोए चली धान असाढ़ आगे गा

और फसल तैयार हो जाने पर लुवाई की तैयारी –

भइया गया किसान हो जा तियार
मूड़ म पागा कान म चोंगी, धर ले हँसिया अउ डोरी ना
चल चल गा भइया लुए चली धान.

çfr fp=.k

लक्षण मस्तुरिया जी अपने गीतों में प्रकृति को जीवंत कर देते थे। उनके गीतों को सुन कर ग्राम्य दृश्य आखों के सामने दिखाई देने लगते थेः

हरियर हरियर बँभरी मा सोन के खिनवा
आगे साँझ सोनहा आजा रे हितवा।
बइहर सँग सँग नाचे मोर करिया करिया बादर
मूड़ ढाँके चन्दा मलमल के लुगरा झांझर।

vkØks'k

अपना राज्य बन जाने के बाद भी छत्तीसगढ़ियों की उपेक्षा देख कर उनका हृदय पीड़ा से विदीर्ण हो उठता था और आक्रोश गीतों में मचलने लगता थाः

जुच्छा गरजै मा बने नहीं अब कड़क के बरसे बर परही
चमचम चमचम चमके मा बने नहीं बन गाज गिरे बर अब परही।

prkouh

छत्तीसगढ़ के दोहन और शोषण से व्यथित छत्तीसगढ़ का सपूत आततायियों को चेतावनी देने के लिए बाध्य

हो जाता है:

मँय सागर हँव जब लहराहूँ, धरती ला सबो भिंजो देहूँ
मोर लहू पियइया बइरी ला, मँय ठाढ़े ठाढ़ निचो देहू
फेर दोस मोला झन देहू रे, मँय सांगन धरे कटारी अँव..

Økfr dk Loj

आततायियों को चेतावनी देने के बाद लक्ष्मण मस्तुरिया छत्तीसगढ़िया जन सैलाब को क्रांति लाने के लिए प्रेरित करते हैं:

जागव रे जागव बागी बलिदानी मन
धधकवरे शिकव रे झुलगता रे सुलगता आगी मन
महाकाल भैरव
महामाया सीतला काली मन....

n'kZu

लक्ष्मण मस्तुरिया अपने गीतों में जीवन दर्शन को भी बहुत सरल शब्दों में बताया करते थे:

जिनगी म मजा हे अनजाने मा
पीरा के पहार हे जग जाने मा
कोनो सुख पाए छीन नँगाए मा
कोनो सुख पाए बाँट गँवाए मा।।

LFkkuh; eku;rk,¡

मस्तुरिया जी ने छत्तीसगढ़ की मान्यताओं को भी अपने गीतों में बड़ी ही कुशलता से चित्रित किया है:

भरे हौंला देखेंव ये शुभ घड़ी आय
अइसन मन म उछाँह हे मन मंगल गाय
तोर संग राम राम के बेरा, भेंट होगे संगवारी
मुस्का के जोहार ले ले.....

thou –';kdu

लक्ष्मण मस्तुरिया जी किसी भी दृश्य को गीतों में इतनी सहजता से उकेर देते थे कि गीत सुनते–सुनते ऐसा लगता था कि सामने ही घटना घट रही है। एक बानगी देखिए:

घरवाली संग देख सिनेमा आत रहेन एक राती
सीटी बजावत बीच सदर मा एक झन मिलिस सिपाही
गाँव से छोरी लाये भगा के, कहिस चलो तुम थाने
अरज करेंव त घुड़किस – साला करता है तकरार
हम तो लुट गएन सरकार, तुँहर भरे बीच दरबार
खुल्लम खुल्ला राज म तुँहर अहा अनाचार

uhfrijd

गुन बिन नाम रूप बेकाम
ज्ञान बुध बिन सेवा बेदाम
त्याग बिन धन–बल हे हराम

धरम बिन तन हे सरहा चाम
बाढ़े मन गुन गौरव सभिमान
होवै गुरु मात–पिता के मान
भइया हो अइसे करो तुम काम
के जग मा होवै तुँहर नाम .....

NUnk dh >yd

मस्तुरिया जी कहते थे – ''मैं स्वच्छेद मस्ती के गीत गाता हूँ'' उनके गीत भले छन्द–विधान के अनुरूप नहीं होते थे तथापि छंदों के काफी नजदीक हुआ करते थे।

nkgk NUn

धन संपत जोरे बहुत, नइ जावय कुछ छ साथ
पुरखा पीढ़ी खप गए, सब गे हाथ।।
चल लछमन अब भाग चली, जंगल भइगे देस
बघुवा के धोखा लगे, गदहा बदलिन भेस।

lo;k NUn

बाढ़े चुन्दी घन बादर जइसन आजू बाजू घिर आवत हे
गाल छुवै कभू माथ छुवै, कनिहा छुई गुदगुदावत हे
अँचरा गिर काँध ले घेरी बेरी अपने महिमा ला बखानत हे
दुई दिन मा कस छोटे बड़े लुगरी पोलखा होइ जावत हे।

vkYgk gUn

लक्ष्मण मस्तुरिया की वीर गाथा, सोनाखान के आगी का प्रवाह आल्हा हन्द से प्रभावित हैः

जिहाँ सिहावा के माथा ले, निकले महानदी के धार
पावन पैरी सिवनाथ तीर, सहर पहर के मंगल हार।
जिहाँ के मनखे फोरैं पथरा, काटैं लोहा कोइला खान
माटी कोड़ें बंधिया बाँधें, जाँगर टोर उगावैं धान।।

?kuk{kjh NUn

धागिनाके नकधिन धिड़कै नगाड़ा बाजै
ढम्मक ढम्मक बाजै झाँझ अउ मँजिरवा
होरी हे होरी हे होरी रंग डारौ तन मन
रस बरसावत हे फाग मा फगुनवा।।

0;oLFkk ij çgkj

अफसर पाकिट मारे सिपाही तब का करही
बिक जाथे कप्तान दरोगा तब का करही
भ्रष्टाचार के गढ़ होवत हे भारत भुइयाँ
मरही भूख ईमान जनता अब का करही।

vkºoku xhr

मात्र चौबीस वर्ष की उम्र में दिल्ली के लालकिले से लक्ष्मण मस्तुरिया ने छत्तीसगढ़ी भाषा में आह्वान किया

था, वह गीत छत्तीसगढ़ का अघोषित थीम सांग बन गया। पृथक छत्तीसगढ़ के जन आंदोलन में यह गीत प्रेरणा का मुख्य स्रोत बना। अनेक देशों की भाषाओं में यह गीत रिकार्ड हो चुका है। राजनैतिक दल इस गीत का प्रयोग अपनी चुनावी रैलियों में बरसों से करते आ रहे हैं। यह गीत लक्ष्मण मस्तुरिया का पर्याय बन गया।

मोर संग चलव रे, मोर संग चलव जी
ओ गिरे थके हपटे मन, ओ परे डरे मनखे मन
मोर संग चलव रे, मोर संग चलव जी

लक्ष्मण मस्तुरिया का विकल्प छत्तीसगढ़ के साहित्याकाश में दूर दूर तक नजर नहीं आ रहा है। छत्तीसगढ़ में उनके जैसा कवि और गीतकर न अभी तक कोई हुआ है और न भविष्य में कोई हो पायेगा। मस्तुरिया ने छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ की पीड़ा को अपने हृदय में समाहित कर लिया था। उनके अधिकांश गीतों में यह पीड़ा देती है। उनके गीतों में छत्तीसगढ़ की आत्मा दिया देती है। कवि का विश्वास कभी व्यर्थ नहीं जाता। एक न एक दिन उनका स्वप्न पूर्ण होगा और छत्तीसगढ़ जरूर ही खुशहाल गा।

एक न एक दिन यही माटी के
पीरा रार मचाही रे
नरी कटाही बइरी मन के
नवा सुरुज फेर आही रे.....

fu"d"k

अपनी मीठी आवाज में छत्तीसगढ़ के सीधे सादे, मेहनती लोगों के दिल की बात कहने वाले गीतकार लक्ष्मण मस्तुरियाजी का शनिवार 3 नवंबर 2018 को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। "मोर संग चलव गा मोर संग चलव जी" का जयगान करने वाले छत्तीसगढ के माटी पुत्र कवि, गायक लक्ष्मण मस्तूरिया जी का अंतिम संस्कार खारून नदी के किनारे महादेव घाट के कबीरपंथी समुदाय के शमशान घाट मे किया गया। कबीर पंथी लक्ष्मण मस्तूरिया (गोस्वामी) पूरे जीवनभर कबीर की परंपरा के वाहक रहे। मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने कहा था कि ''मस्तुरिया छत्तीसगढ़ के जन–जन के कवि और छत्तीसगढ़ी गीत–संगीत के बेताज बादशाह थे।

lanHkZ lwph

1. हमू बेटा भुंइया के (काव्य संग्रह), लक्ष्मण मस्तुहिया
2. गंवई–गंगा (गीत संकलन), लक्ष्मण मस्तुहिया
3. सोनाखान के आगी (खण्डकाव्य), लक्ष्मण मस्तुहिया, प्रकाशक–लोकसुर प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ़, वर्ष प्रथम संस्करण, 1983;
4. धुनही बंसुरिया (गीत संकलन), लक्ष्मण मस्तुहिया
5. https://www.thechorus.co/s/news/403
6. https://gurturgoth.com/sujan-kavi-ke-sujan-chand/
7. http://kavitakosh.org
8. https://m.facebook.com/lmorsangchalav/photos
9. https://dprcg.gov.in/post
10. http://srijannews.com/news_description.php?newsid=2020
11. https://cgsongs.wordpress.com
12. http://lokkalakar.blogspot.com/
13. https://iamchhattisgarh.in/chhattisgarh-ke-vyaktitva.html

****